2-8-67 ओम शान्ति रात्री क्लास

बच्चे बाप को ज्ञान का सागर कहते है। इसको ही रचता पादर कहा जाता है। साधु सन्त आद भी कहते है कि रचता और उसकी रचना आद को हम नही जानते है। वो जानते है। बाप भी कहते है कि हम जानते है तुम नही जानते हो। 84जन्मों के लिये भी बाप कहते है कि हम जानते है तुम नही जानते हो।अब यह सभी बाते 84जन्मो की है। रचना की आद मध्य अन्त का राज रचता बाप ही समझाते है। रचता है तो जरूर फिर विनाश भी कराते है। सिर्फ कियेटर कहना तो आना कि बस प्रलय हो फिर नई दुनियां रचते है। बच्चे जानते है कि बेहद का बाप अब नई दुनियां स्थापन करते है। बाबा-बाबा कहते रहना चाहिये। लौकिक बाप तो नही कहेंगे नां कि मामेकम्याद करो। एक ही पारलौकिक बाप है जो कहते है कि मामेकम्याद करो। बेहद के ढेर बच्चे है। बहुत आते जावेंगे। यह मकान तो बहुत बड़ा बनाना पडेगा। यह पुरा ठिकाना है वानप्रस्थ अवस्था वालो का। यह है बेहद की वानप्रस्थ अवस्था का आश्रम। मनुष्य मात्र तो एक भी नही है जो कि बाप को जाने वा यथार्थ रीती याद कर सके। ईश्वर का स्मरण करते है परन्तु फल कुछ भी नही मिलता है। क्योकि जानते नही है। शिव के मन्दिर मे जाकर काशी कलवट खाते है।परन्तु ऐसे नही कि वो शिव पुरीमे पहुच सकते है। इनकारपोरियल वर्ल्ड को शिवपुरी कहा जाता है। तुम जानते हो कि अब यह नाटक पुरा होता है। हम जानते है कि शान्तिधाम फिर यहाँ आवेगा।सतोप्रधान दुनियां वो स्वर्ग बन जावेगा और फिर हम यहां पर आवेंगे। दिलवाला मन्दिर देखेंगे तो समझेंगे कि वास्तव मे यह तो हमारा ही यादगार है। शक्ल तो तुम्हारी थोडेई होगी। तुम्हारा शरीर तो यहां पर ही खलास हो जावेगा। क्वो को यह नालेज बाप बिना कोई [illegible] होने के लिये बाप पास आते है।बेहद का बाप है तो दादा भी बेहद का ही हो जाता है। सारी दुनियां के जो भी मनुष्य मात्र है उनका रचना प्रजापिता ब्रह्मा ही गाया जाता है। यह चोटी भी नही है। तो बाबा नई सृष्टी रच रहे है नां। यह है मुखवंशावली। नई दुनियां तो शुरू ही होती है मुखवंशावली से। इस समय तुमको ऐडाप्ट किया जाता है इसलिये तुम हो मुखवंशावली।ऐडाप्ट कोई से तो करते ही होगें नां। बुड्ढे को ऐडाप्ट कर ब्रह्मा बनाते है। मनुष्य से देवता किये...गाते है नां। ऐसे तो कही भी नही है कि आसुरो और देवताओं की युध होगी। बाप समझाते है कि दो है क्षुद्र सम्प्रदाय। असुर कहा जाता है रावण सम्प्रदाय वालो को। तुम तो डायरेक्ट ईश्वर के हो गये हो नां। तुम जानते हो कि प्रजापिता ब्रह्मा कैसे ऐडाप्ट करते है। कन्या को ऐडाप्ट करते है तो कहते है नां कि यह हमारी स्त्री है। सतयुग मे भी ऐसे ही होगा। स्त्री को ऐडाप्ट किया जाता है नां। इस समय तो बच्चे है कुखवंशावली। एक बाप प्रवेश कर मुखवंशावली बनाते है। कहते है नां कि ईश्वर का अन्त कोई नही पाते है। ईश्वर को कोई जान नही सकते है। नां ईश्वर को नां ही अपनी आत्मा को ही जानते है। बाप ही आकर समझाते है। नाम रूप से न्यारी तो कोई बात होती ही नही है।बाप सभी बाते समझाते है। मनुष्य से डाक्टर सर्जन बैरिस्टर वगैरहा बनते है नां। यहां तो फिर तुमको बाप देवता बनाते है। तुमको देवता नही पढाते है। यह है अलौकिक पढाई जो कि शिव बाबा पढाते है और तुम बच्चे पढते हो। यहां पर तो देवता है ही नही जो कि मनुष्य को पढा कर देवता बनावे। बाप तुमको ऐडाप्ट की कर फिर पढाते है। भक्ति मार्ग की तो है ही पुरानी कहानियां। देवताये भी होकर गये है। क्राईस्ट भी तो क्रिश्चनस का होकर गया है नां। तुम जानते हो कि यह सब होकर गये है उनकी ही कहानियां सब पीछे बैठ बनाते है। सत त्रेता मे क्या हुआ है वो दुनियां नही जानती है। अब तो मूल वतन को भी तुम्ही ने जाना है। वहां पर हम आत्मायें रहती है। यह बाते जो अच्छे-2 समझे है वो ही समझते है। बुढ़े-2 इतना नही समझ सकते है। सुनेंगे तो भी फिर भूल जावेंगे।

क्योंकि देखा जाता है कि तकदीर मे इतना नही है। बच्चे अटेंशन नही देते है वां तकदीर मे नही है तो तकदीर तदवीर भी क्या करेगी। तदवीर और तकदीर। तकदीर मे ही नही है तो बाबा क्या कर सकते है। बच्चो की बुधी मे है कि बेहद का बाप हम बच्चो को बैठ कर पढाते है। तो बेहद की राजाई स्थापन हो जाती है। फिर भक्ति मार्ग मे ऊंच कर्म करने से भी हद की राजाई मिल जाती है। 50-60 गांव होगें। मगर तुम तो विश्व का ही मालिक बनते हो। यह बुधी मे लाना चाहिये। परमपिता परमात्मा ने विश्व को विश्व की बादशाही की वर्सा दिया है। भारत सतयुग था नां। देवी देवताओं का राज्य था। और कोई भी नही था। नां ही कोई बौधी खण्ड, चीनी खण्ड था। तुम जानते हो कि स्वर्ग मे यहां का पता नही रहेगा। सूर्यवंशी है तो चन्द्रवंशी नही है। फिर चन्द्रवंशी है तो वैश्यवंशी नही है। मुख्य तो है देवता धर्म। बाकी दूसरे धर्म तो है बायेप्लाटस। यह वरायटी धर्मों का वरायटी फीचर्स का झाड है। विराट रूप तुम्हारे लिये है। 84 जन्मो मे इन वर्णों मे आते है। इस समय तो मनुष्य नई दुनियां का नाम सुन कर अलब खाते है। जिनकी बुधी मे बैठता है जिनको अच्छा लगता है उनकी बुधी मे जम जाता है। कलम कैसे लगती है वो बन्डर है नां। इन देवी देवता धर्मो का कलम लग रहा है। पहले-2 तो खुद से ब्रह्मण बनते है। तो कलम लग जाता है। ढेर की ढेर प्रजा होती है। बृधी को पाते है नां। राजाओं की भी बृधी प्रजा की भी बृधी होती जायेगी। कितने ही आकर सिखेंगें। सीखेंगें। अभी तो बहुत ही थोडे है। 10% भी नही है। 2 से 4 फिर 4 से 8 ऐसे-2 झाड बढ़ता है। इसमे फिर तूफान लगने पर छनते भी है गिरते भी है। बाप कहते है कि अंत मे कोई भी याद नही आना चाहिये। आत्मा को सतोप्रधान बनना ही है। इसके लिये ही यह योगाग्नी है। तुम बच्चे समझते हो कि हम बाप को याद करने से सतोप्रधान बन जावेंगें। मूल बात तो है याद की यात्रा। भक्ति मार्ग की परकमायें आद तो अब आपे ही छूटी। अब सिर्फ शान्त मे रहना है। बाप को याद करो और 84 के चक्र को याद करो। मुख से भी बोलो नही। बच्चे अब मूल वतन को भी जानते है। जहां पर बाप रहते है वहां पर ही हम भी रहते है। बाकी सृष्टी का चक्र तो यहां है समझना होता है। दुनियां मे तो मनुष्य कुछ भी नही जानते है। सर्विस लिये तो बाबा कहते रहते है कि अच्छे-2 चित्र बनाओं की तैयारी करो। बाकी फण्ड आद इक्ठा नही करना है। सावलशाह की हुण्डी भरतीही है। ड्रामा मे तो पहले ही से नूंध है। समय पर सभी कुछ आ जावेगा। इससे तुम बेफिकर रहो। तुम काम करेंगें तो वो भी ड्रामा अनुसार पहले ही से नूंध है। बाप खातरी देते है तो बाबा थोडेई डरेंगें। दुखहालाल का कुआं भरा हुआ है। याद के चार्ट से बच्चो की अवस्था का पता पड जाता है। याद मे ही नां रहने से पाप भी हो जाते है। बडी उंची मंजिल है। इसलिये बाबा कहते है कि शाम को रोजाना पोतामेल निकालो। घाटा अथवा फायदा तो होता ही है नां। सयाणे बच्चे तो रोजाना अपना पोतामेल देखेंगें कि आज हमने कितनी कमाई की है। आज तो फायदा बहुत हुआ। आज कम हुआ। देहअभिमान कारण अपना बहुत नुकसान कर लेते है। शिव बाबा के तो दिल ही से हट जाते है। फिर तो उनका बोल-चाल भी शैतानी हो जाता है। बाप आकर देहीअभिमानी बनाते है। बाबा हमेशा समझाते है कि यहां पर जिनको भी ले आओ तो ठीक-2 कर लेकर आओ। बच्चे को ले आते है तो ले आने वाले पर भी दण्ड पड़ता है।

********** ************

बहुत नुकसान हो जाता है। बाबा का बन कर अपने से कोई भूल करते है तो अपना बहुत ही सत्यानाश कर लेते है। 5 मंजिलों पर से धक्का खाने पर हडी गोडे आद सब टूट जाते है। माया तो ऐसी प्रबल है कि जो नाक से पकड कर भी गटर मे डाल देती है। बच्चे राय देते है। भगवान भला किसीसे

****

क्या राय लेगें। वो तो राय देने योग्य है नां। अंदर मे हसते भी है। मै तो सबसे ही अच्छी राय निकालगां। और फिर करता भी तो मै ही हूं करना तो बाबा को ही पड़ता है नां। बाबा राय देते है तो चित्र बनाते हो। किसीको दो गे तो वो बहुत खुश होगें परन्तु माया रूपी चूहे भी आ लगते है नां।